بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

Office of The sadar Majlis Ansarullah Bharat

دفتر صدر مجلس انصار اللہ بھارت

Ph. +91-01872-220186, Fax, +91-01872-224186, Mob, +91-9815494687, E-Mail: ansarullahbharat@gmail.com

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः सैय्यदना ख़लीफ़तुल मसीहिल ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ दिनांक **05.08.16** बैतुल फ़तूह लंदन।

अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से दुनया के प्रत्येक देश में जमाअत के लोगों का यह स्वभाव बन चुका है कि जमाअत के प्रत्येक वर्ग और प्रत्येक आयु के लोगों ने जलसा सालाना के मेहमानों की सेवा करनी है।

यह वह स्वभाव है जो अल्लाह तआला की कृपा से दुनया के प्रत्येक देश में रहने वाले अहमदी का है, चाहे वह अफ्रीक़न है अथवा इन्डोनेशियन है या जज़ायर का रहने वाला है या पश्चिम के उन्नत देश का रहने वाला है।

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के पश्चात हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

इन्शाअल्लाह तआला अगले जुम्अः से बर्तानिया का जलसा सालाना शुरु हो रहा है। अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से जलसा सालाना में भाग लेने के लिए दुनया के विभिन्न देशों से मेहमानों का आगमन प्रारम्भ हो गया है। अल्लाह तआला जलसा सालाना के प्रबन्धन कर्ताओं को जलसे में आने वाले मेहमानों, चाहे वे दुनया के विभिन्न देशों से आने वाले हैं अथववा बर्तानिया के विभिन्न क्षेत्रों से आने वाले हैं, उनकी सुन्दर रंग में सेवा करने की तौफ़ीक़ प्रदान करे। अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से जलसे में आने वाले मेहमानों की सेवा के लिए बर्तानिया के चारों ओर से बूढ़े नौजवान बच्चे महिलाएँ अपने आपको स्वयं-सेवकों के रूप में पेश करते हैं और जैसे जैसे शामिल होने वालों की संख्या में वृद्धि हो रही है, जलसे की व्यवस्थाएँ बढ़ रही हैं, सेवकों की भी अधिक आवश्यकता होती है और अल्लाह तआला की कृपा से बिना किसी कठिनाई के तथा उल्लास के साथ बच्चे भी, युवक भी, युवतियाँ भी, पुरुष भी अपने आपको सेवा के लिए प्रस्तुत करते हैं तथा अधिकतम युवक और बच्चे यह सेवा करके समझ रहे होते हैं कि यह अल्लाह तआला का फ़ज़्ल और एहसान है कि उसने हमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मेहमानों की सेवा करने का सामर्थ्य प्रदान किया और अल्लाह तआला की कृपा से दुनया के प्रत्येक देश में जमाअत के लोगों का यह स्वभाव बन चुका है कि जमाअत के प्रत्येक वर्ग और प्रत्येक आयु के लोगों ने जलसा सालाना के मेहमानों की सेवा करनी है।

यह वह स्वभाव है जो अल्लाह तआला की कृपा से दुनया के प्रत्येक देश में रहने वाले अहमदी का है, चाहे वह अफ्रीक़न है अथवा इन्डोनेशियन है या जज़ायर का रहने वाला है या पश्चिम के उन्नत देश का रहने वाला है। जब दुनया की प्राथमिकताएँ स्कूलों, कॉलिजों में छुट्टियों के चलते खेलना कूदना तथा सैर करना है, जब दुनया की नौकरियाँ करने वालों की प्राथमिताएँ नौकरियों से छुट्टी मिलने पर आराम करना तथा परिवार के

संग छुटिटयाँ बिताना है, उस समय एक अहमदी की प्राथमिकताएँ विभिन्न हैं। यदि इन छुट्टियों में जलसा सालाना आ रहा है तो इन दिनों में पढ़े लिक्खे भी और अनपढ़ भी, अफ़सर भी और आधीन भी, निपुण व्यवसाई भी और साधारण मज़दूर भी तथा विद्यार्थी भी अपने आपको स्वयं-सेवा की भावना से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मेहमानों की सेवा के लिए पेश करते हैं।

कई बार कुछ लोगों की सेवा भावना निःसन्देह अत्यधिक होती है परन्तु स्वभाव प्रत्येक का अपना है। कुछ साहस की दुर्बलता का शिकार होते हैं, कुछ जानकारी के अभाव के कारण कुछ ऐसी बातें कर जाते हैं अथवा उनसे ऐसी बातें हो जाती हैं जो मेहमानों के लिए कष्टदायक बन सकती हैं और याद दिलाने से स्वेच्छा से काम करने वाले कार्य-कर्ता सावधान भी हो जाते हैं और अधिक ध्यान पूर्वक अपने दायित्वों का निर्वाह करने का प्रयास करते हैं। याद दिलाना तथा सावधान करना भी अल्लाह तआला का आदेश है। इस लिए मैं प्रत्येक वर्ष जलसा सालाना से एक जुम्अः पहले इस ओर ध्यान दिलाता हूँ। क़ुरआन-ए-करीम में भी अल्लाह तआला ने अतिथियों के वर्णन में हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की मेज़बानी का वर्णन करके आतिथ्य का महत्त्व बताया है और आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी विभिन्न अवसरों पर आतिथ्य की महत्ता और इसके लक्षणों को बयान फ़रमाया है। इस ज़माने में हमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने भी इस ओर विशेष ध्यान दिलाया है बल्कि अपनी नियुक्ति के उद्देश्यों में से एक उद्देश्य दीन के लिए यात्रा करके आने वाले अतिथियों का आतिथ्य भी निश्चित किया है। आज दुनया के कोने कोने में जलसे के ये आयोजन, ये दृश्य दिखाते हैं कि लोग अधिक मात्रा में आते हैं तथा आध्यात्मिक और शारीरिक भोज प्राप्त करते हैं और यहाँ ख़लीफ़-ए-वक़्त की उपस्थिति में बर्तानिया में इस कारण से दुनया के कोने कोने से अतिथि आते हैं और केवल इस लिए कि दीन का ज्ञान प्राप्त करें तथा अपनी रूहानी प्यास बुझाएँ। आज हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ग़ुलाम, अल्लाह तआला के निर्देशानुसार निःस्वार्थ और बिना किसी लाभ के तथा बिना थके और माथे पर बल डाले बिना, इन मेहमानों की सेवा कर रहे हैं और यही हमारा कर्तव्य है कि इन मेहमानों की सेवा करें और जलसे की व्यवस्था को सुन्दर रंग में सम्पन्न करने का प्रयास करें। जलसे पर ग़ैर अहमदी तथा ग़ैर मुस्लिम भी आते हैं तथा सदैव कार्य-कर्ताओं के काम से प्रभावित होते हैं और इस बात पर आश्चर्य चकित होते हैं कि किस प्रकार छोटे छोटे बच्चे अपने दायित्व का निर्वाह कर रहे हैं, अपने ऊपर लगाई गई डयूटी को पूरा कर रहे हैं तथा बड़े उत्साह पूर्वक पूरा कर रहे हैं।

पिछले साल एक मेहमान योगेन्डा से आए हुए थे जो वहाँ के मन्त्रि भी हैं, कहने लगे मैं आतिथ्य के प्रबन्ध को देखकर चकित हुआ कि किस प्रकार लोग स्वयं-सेवा के रूप में इतना बलिदान दे रहे हैं। कहने लगे मैंने सोचा भी नहीं था कि मैं एक ऐसे जलसे में शामिल होने जा रहा हूँ जहाँ इंसान नहीं बल्कि फ़रिश्ते काम करते दिखाई देंगे। कहते हैं कि बीस बार भी कोई चीज़ माँगो तो हंसते हुए पेश करते थे। अनेक लोग इस बात को व्यक्त करते थे कि बच्चे खाने की डयूटी पर खाने खिला रहे होते हैं तो अत्यधिक उत्साह के साथ, यदि जलसे की मार्की में पानी पिला रहे होते हैं तो खिले हुए चेहरे के साथ, बार बार किसी आवश्यकता को पूछते, पानी को पूछते और यह केवल विशेष अतिथियों के लिए ही नहीं बल्कि प्रत्येक मेहमान के लिए कारकुनों का व्यवहार था तथा यही वह विशेषता है सेवा की भावना की जो केवल जमाअत-ए-अहमदिया के प्रत्येक कार्य-कर्ता की विशेषता है और होनी चाहिए। इस प्रकार इस विशेष भावना को प्रत्येक कार्य-कर्ता ने सदैव

जीवित रखना है चाहे वह किसी भी विभाग में सेवा कर रहा हो। हमारे जलसे के मेहमान जब आते हैं तो उनका सम्पर्क विभिन्न विभागों से होता है। प्रबन्धकों को आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इस बात को याद रखना चाहिए कि अपने भाई से प्रसन्नता पूर्वक मिलो और यह सदक़ा है। फिर एक अवसर पर यह भी फ़रमाया कि छोटी नेकी को भी तुच्छ न समझो। अपने भाई से शालीनता से पेश आना भी नेकी है। देखें, इस्लाम की शिक्षा कितनी सुन्दर है।

फिर रास्ता दिखाना भी, आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, एक सदक़ा है। जो विभाग इस काम के लिए नियुक्त है उसको भी इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि यात्रा पर आए यात्री से एक तो प्रसन्न चित होकर मिलें फिर सहयोगियों के द्वारा उन्हें उनके विश्राम स्थलों पर पहुंचाएँ। विशेष रूप से जब महिलाएँ और बच्चे होते हैं।

फिर भोजन के समय आतिथ्य का विषय है। इसमें खाना खिलाने वाले अफ़सर तथा सहयोगी इस बात का ध्यान रक्खें कि मेहमान से प्रसन्नता पूर्वक व्यवहार करना है। प्रसन्न चित मन से व्यवहार करना अतिथि का अधिकार है और मेहमानी करने वाले का कर्त्तव्य है। खाना एक ऐसी चीज़ है जिसमें खाना खिलाने वाले का अनुचित व्यवहार अथवा तनिक सी भी अनावश्यक टिप्पणी अथवा कोई बात कह देना, मेहमान की भावनाओं को चोट लगाता है। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सहाबा तो मेहमानों की सेवा करते समय ऐसे नमूने दिखाते थे जो सदैव स्वर्ण अक्षरों में लिक्खे जाएँगे।

अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के साथ अल्लाह तआला के वादों के अनुसार दुनया में अब प्रत्येक स्थान पर जहाँ जमाअतें सुदृढ़ रूप में स्थापित हैं, लंगर चल रहे हैं तथा विशेष रूप से जलसे के दिनों में तो इसकी विशेष व्यवस्था होती है। हमने तो केवल इतनी सेवा करनी है कि लंगर से खाना लेकर मेहमान के सामने पेश कर देना है तथा मेहमान से प्रसन्नता पूर्वक पेश आना है और इस बात से अल्लाह तआला ख़ुश हो जाता है कि उसने जलसे पर आने वाले, दीन के लिए यात्रा करके आने वाले मेहमानों की सेवा की और यदि उचित रूप से मेहमान नवाज़ी न हो तो अप्रसन्नता भी व्यक्त होती है अल्लाह तआला की ओर से। एक अवसर पर कुछ मेहमानों के साथ विशेष व्यवहार किया गया और कुछ अतिथियों को अनदेखा किया गया। ये सारे काम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने में जो भी प्रबन्ध था, मेहमानदारी के कार्य-कर्ता थे, उन्होंने किया तो अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को रात के समय सूचना दी कि रात को दिखावा किया गया है, बनावट की गई है और उचित रूप से मेहमानों की सेवा नहीं की गई, कुछ निर्धन लोग खाने से वंचित रहे हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इस बात पर बड़े अप्रसन्न हुए तथा फिर व्यवस्था अपने हाथ में ले ली बल्कि यह भी लिक्खा है कि उन कार्य-कर्ताओं को छः महीने के लिए क़ादियान से ही निकाल दिया। अतः जब हम सेवा के लिए अपने आपको पेश करते हैं तो फिर बिना किसी भेद भाव के प्रत्येक की सेवा करनी चाहिए। प्रत्येक जलसे पर आने वाला मेहमान जलसे का मेहमान है। प्रत्येक के साथ सद्व्यवहार करना, प्रत्येक से प्रसन्नता पूर्वक पेश आना, यह अनिवार्य है। यह नहीं कि अमुक व्यक्ति अमीर है अथवा अमुक विशेष मेहमान है, उसको विशेष स्थान पर खाना खिलाना है और दूसरे को नहीं।

फिर साथ ही यह दुआ भी करते रहना चाहिए कि अल्लाह तआला हमारी इस तुच्छ सी सेवा को जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के अतिथियों की हम कर रहे हैं इसे क़बूल भी फ़रमाए और हमारे काम हर

प्रकार के दिखावे से ख़ाली हों तथा केवल अल्लाह के लिए हों। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के समय में मेहमानों की कई बार इतनी अधिकता हो जाती थी कि रहने के लिए भी व्यवस्था में कठिनाई लगती थी। क्यूँकि क़ादियान छोटी सी बस्ती थी परन्तु हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम, अल्लाह तआला के इस उपदेश के अनुसार कि परेशान नहीं होना और थकना नहीं, निःसंकोच वातावरण में जो भी सुविधा मेहमानों के लिए उपलब्ध हो सकती थी, फ़रमाया करते थे। कई बार ऐसे अवसर भी आए कि सर्दियों में मेहमानों की अधिकता के कारण अपने और अपने बच्चों के गरम बिस्तर आपने मेहमानों को दे दिए। एक बार इतने मेहमान आ गए कि हज़रत अम्माँ जान हज़रत उम्मुल मोमिनीन बड़ी परेशान थीं कि मेहमान ठहरेंगे कहाँ तथा किस प्रकार उनके लिए व्यवस्था होगी?

तर्बियत का विभाग इस दृष्टि से भी सक्रिय होना चाहिए कि लोगों को और जलसे में शामिल होने के लिए जो लोग आते हैं उनको जलसे के महत्त्व की ओर ध्यान दिलाते रहें। निःसन्देह कार्य-कर्ता जब अपने आपको सेवा के लिए पेश करता है तो उसका दायित्व है कि निःस्वार्थ होकर काम करे और अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से सामान्यतः कारकुन, जैसा कि मैंने पहले भी कहा, इस भावना से काम करते हैं परन्तु कुछ अनुचित व्यवहार भी दिखा जाते हैं उन्हें सदैव आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की यह नसीहत याद रखनी चाहिए जो मैंने पहले भी बयान की है कि हर अवस्था में सुन्दर आचरण का प्रदर्शन होना चाहिए। इसी प्रकार प्रत्येक कार्य-कर्ता को साधारणतः हर समय सावधान भी रहना चाहिए। सैक्योरिटी केवल सैक्योरिटी वालों का काम नहीं बल्कि प्रत्येक विभाग का हर एक कार्य-कर्ता अपने आस पास नज़र रखने वाला होना चाहिए। कारकुनों को यह भी याद रखना चाहिए कि जलसा समाप्त होने के बाद केवल वाईन्ड अप के ही कारकुन वहाँ उपस्थित न हों बल्कि प्रत्येक कारकुन को उस समय तक जलसा गाह में रहना चाहिए जिसकी भी वहाँ डयूटी है, जब तक कि कोई भी मेहमान वहाँ मौजूद है अथवा जब तक उनके सम्बंधित अधिकारी उन्हें छुट्टी नहीं दे देते कि अब आप काम पूरा कर चुके हैं, चले जाएँ। सबसे बढ़कर कारकुनों को भी तथा सामान्य रूप से जमाअत के समस्त लोगों को भी यह दुआ करनी चाहिए कि अल्लाह तआला प्रत्येक को सुन्दर रंग में अपने दायित्वों को निर्वाह करने का सामर्थ्य प्रदान करे। सभी कार्य-कर्ता जो इस समय वहाँ काम कर रहे हैं जलसा गाह में, उनको हर प्रकार से सुरक्षित रक्खे। कई बार बड़े भारी भारी काम करने पड़ते हैं और कई बार चोट इत्यादि लगने की भी सम्भावना रहती है। अल्लाह तआला प्रत्येक को हर प्रकार से सुरक्षित भी रक्खे।

अल्लाह तआला जलसे को हर प्रकार से बरकत वाला और सफल भी बनाए। किसी भी विरोधी और बुरी मानसिकता रखने वाले की कुधारणा से अल्लाह तआला जमाअत को हर प्रकार से सुरक्षित रक्खे और अल्लाह तआला प्रत्येक कार्य-कर्ता को सामर्थ्य प्रदान करे कि वह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के जलसे पर आए हुए मेहमानों की सुन्दर रंग में सेवा करते रहें तथा शालीनता के साथ सेवा पूरी करते रहें।

कार्य-कर्ता जो सेवा करने के उत्तम स्तर प्राप्त किए हुए हैं, जिन उच्च स्तरों पर वे पहुंचे हुए हैं, उससे उच्चतम स्तर हर बार पेश करने वाले हों और इस बार भी पहले से बढ़कर सेवा करने वाले हों। इसमें कभी कमी नहीं होनी चाहिए, हर क़दम जो है हमारा आगे बढ़ने वाला होना चाहिए और जब ऐसी सेवा होती है तो अल्लाह तआला फिर प्यार की नज़र भी डालता है। अल्लाह तआला सबको इसकी तौफ़ीक़ प्रदान करे।